कहानी

परिणाम

नबनीता देब-सेन

रामचन्द्र और लक्ष्मण घर लौटे थे, सीता देवी आ गई थीं और लंका का युद्ध समाप्त हो गया था। अयोध्या खुशियों से सराबोर थी। चौदह वर्षों के बाद कौशल्या मुस्कुराई और केकैयी ने आंसू पोंछे। उर्मिला भी जाग गई और भरत ने राम के चरणों में राजपाट अर्पित कर दिया। चारों ओर रंग बिरंगी रेशमी झालरें, अंगूर-संतरों से लदी चौखटें और गाजे-बाजे की धूम थी। सड़कों पर औरतें गजरे और इत्र से लदी-सजी घूम रही थीं। मर्द फूल और तिलक लगाए इठला रहे थे। हर कोने पर मिठाइयों के थाल, फलों की टोकरियां, जूस और बादाम के शर्बत बंट रहे थे। सब कुछ मुफ्त था। फिज़ा में संगीत की लहर और दिलों में जोश व उमंग। सकून के दिन आ चुके थे।

राम राज्य- जहां दुख, बीमारी, पाप और भूख का नामो निशान न होगा, व ईर्ष्या और लालच बीती बातें। खुशहाली से भरे घरों में बच्चों की किलकारियां गूंज रही थीं। फलों से बागान लदे थे और कल-कल करती नदियां बह रही थीं। ये अयोध्या थी- मनमोहक, महकी और स्वर्ग जैसी। चौदह घोड़ों के रथ पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न अस्त्र-शस्त्र से सजे गलियों से गुज़रे। लोगों ने चारों राजकुमारों का स्वागत जयकार और फूलों से किया।

जब रथ सड़क पर से गुज़र रहा था तो राम और लक्ष्मण के नथुनों में एक भीनी-भीनी, मदहोश करने वाली खुशबू आई जिसने उनके बदन में सनसनी फैला दी। रामचन्द्र ने सुमंत्र से पूछा, "सुमंत्र यह स्वर्गसरी लुभावनी खुशबू किसकी है?" सुमंत्र ने फौरन रथ की रफ्तार तेज़ की और बोले "छी, छी महाराज यह आप क्या कह रहे हैं। आप इस महक को स्वर्ग जैसी समझ रहे हैं पर ये तो बदबू है। इस इलाके में काफ़िर बसते हैं और यह गंध उनकी रसोई से आ रही है। इसका तो एक भभका भी आत्मा को अपवित्र करने के लिए काफी है।"

भरत ने राम-लक्ष्मण को पूरी बात समझाई। चौदह वर्षों में व्यापार और अर्थव्यवस्था में बदलाव आये थे। विभिन्न देशों के व्यापारी व्यापार के लिए अयोध्या आ पहुंचे थे। बाज़ार में नये कपड़े, नये उपकरण, नई कारीगरी दिखाई पड़ रही थी जो इन्हीं व्यापारियों की बदौलत थी। पर एक बात खटक रही थी। इन व्यापारियों का मज़हब अलग था, उनके रिवाज अलग थे। वे दिन में पांच दफा पूजा करते थे। उनका खान-पान भी अलग था- वे भोजन में लहसुन-प्याज़ का उपयोग करते थे जो अब तक वर्जित था। यहां तक कि उसकी गंध से भी दूर रहा जाना चाहिए था। और खाना तो पाप था, घोर पाप।

"हे भगवान", राम बोले, "सुमंत्र जल्दी चलो। इन काफ़िरों को मेरा आशीर्वाद पहुंचा देना।"

समय गुज़रा और सभी लोग इस किस्से को भूल गए, सिवाय लक्ष्मण के। उस पर तो सम्मोहन सा जादू छा गया था। उस खुशबू का ध्यान आते ही मुंह में पानी भर जाता था। वह जानते थे कि उन्हें उस भोजन का स्वाद लेना ही होगा। चौदह वर्ष का वनवास काफी था तकलीफ उठाने के लिए। रामचन्द्र को राजपाट मिल चुका था। अब लक्ष्मण की बारी थी।

वह चल पड़े उसी काफ़िर इलाके की ओर। दोबारा खुशबू आई और उसे तलाशते हुए वे एक सफेद बंगले तक पहुंचे। नीले दरवाज़े को खटखटाया। एक बुजुर्ग सभ्रांत पुरुष ने दरवाज़ा खोला। शरीर पर रेशमी कपड़े, बालों में मेंहदी और इत्र लगी सफेद दाढ़ी। उन्होंने लक्ष्मण को फौरन पहचान लिया और सलाम किया। घर के अंदर आदर से बैठाकर शर्बत मंगवाया। उनकी पत्नी गोश्त पका रही थी जिसकी खुशबू से लक्ष्मण बेचैन हो रहे थे।

उनकी ज़बान चटखारे लेने लगी थी। तो बिना देर किये लक्ष्मण ने बुजुर्ग को अपना इरादा जता दिया। दम्पति ने खुशी-खुशी लक्ष्मण को परांठे और कबाब पेश किये। लक्ष्मण ने अपने जीवन में इतना लज़ीज़ भोजन कभी नहीं चखा था।

बुजुर्ग महिला ने उसे बताया "बछड़े के नर्म मांस से लजीज़ कुछ और नहीं होता।" लक्ष्मण खिलखिला उठे, "अब मुझे पता चला कि वेदिक काल के ऋषि अतिथि के आगमन पर बछड़े क्यों मारते थे। इसलिए अतिथि को *गोघना* भी कहते हैं। *गो-घना*-गाय को मारने वाला। अब मैं इन शब्दों का मतलब समझ पाया हूं।" फिर कुछ सोचकर बोले, "पर *गोघना* शब्द का उपयोग न किया जाए तो बेहतर है। आज हिन्दुओं के लिए गो-मांस का सेवन वर्जित है। अजीब बात है हमारे पूवर्जों की बनाई पवित्र रीत अब पाप समझी जाती है। यह बात मेरी समझ के बाहर है।" पर बोलते-बोलते लक्ष्मण के चेहरे के भाव बदल गये और चिंतित स्वर में उन्होंने कहा, "हे भगवान, इसका मतलब यह हुआ कि मेरा भी धर्म भ्रष्ट हो गया है।"

बुजुर्ग व्यक्ति हैरान हो गये, "राजकुमार, आप यह क्या कह रहे हैं। धर्म भ्रष्ट होना इतना आसान नहीं होता। अतिथि का सत्कार पाप नहीं होता। अगर ऐसा होता तो गौतम बुद्ध अपने शिष्यों का दिया मांसाहरी भोजन स्वीकार नहीं करते। आप खुद को इन धार्मिक सिद्धान्तों में उलझाकर तकलीफ न पहुंचाएं। ये हमारी समझ से परे हैं। आप यह मीठा पान खाएं और सब भूल जाएं। और यह दूसरा पान रख लें, इसे महल पहुंचकर खा लें। हां, इस बात का ज़िक्र किसी से न करें। जब तक किसी को खबर नहीं होगी सब ठीक रहेगा।"

पर लक्ष्मण इस बात को छुपाकर नहीं रख पाये। उन्होंने उस लज़ीज़ भोजन की चर्चा सबसे की। उर्मिला को तो *गोघना* का अर्थ तक समझा डाला। सहमी-कांपती उर्मिला ने हाथ जोड़े, "आर्यपुत्र, लगता है आपने गौ-मांस का सेवन कर लिया है। ऐसा करने पर हिन्दू भगवान रहित समझे जाते हैं। अब आप का भी यही हाल है और मैं किसी काफ़िर की पत्नी नहीं रह सकती। मुझे छोड़ दीजिए", उसने आंचल से मुंह ढांपकर विनती की।

लक्ष्मण हंस पड़े, "मूर्ख लड़की मैं चौदह साल बाद वापस लौटा हूं और मौज-मस्ती का इरादा रखता हूं। और तुम धर्म और भगवान का रोना रो रही हो। तुम मेरी अर्धांगिनी हो, आधे की हिस्सेदार। अगर मैं काफ़िर हूं तो तुम भी काफ़िर हो चुकी हो। इसलिए छोड़ने की रट बंद करो और जाकर फरीदा बीबी से गोश्त पकाना सीखो। मैं सुमंत्र से कह कर सब प्रबंध करवा दूंगा।"

उर्मिला सरपट अपनी सास सुमित्रा के पास इजाज़त लेने पहुंची। तीनों रानियां यह बात सुनकर स्तब्ध रह गईं। उन्होंने कुछ काना-फूसी तो पहले ही सुन रखी थी। पर अब वे उर्मिला से क्या कहें?

पिछले चौदल सालों में दशरथ की मृत्यु के बाद रानियों ने काफी कुछ सहा था। राम का वनवास, भरत का राम की खड़ाऊं के प्रति सम्मान। उन्होंने पूजा-पाठ में ही सुकून तलाशने का प्रयास किया था। केकैयी तो सन्यासिन ही हो गई थी। सुमित्रा को सफाई का जुनून सवार था और कौशल्या घर की देखभाल में खुद को व्यस्त रखती थीं। उर्मिला की बात सुनकर सुमित्रा बिफर गई "मेरा यह बेटा कुछ न कुछ परेशानी खड़ी करता ही रहता है। वह मांस खाता है और शर्मिंदा भी नहीं होता। यह नहीं कि गलती का सुधार करे और पंडित बुलाकर गोबर-गंगाजल से शुद्धि करे। ऊपर से अपनी पत्नी को काफ़िरों के पास गो-मांस पकाना सीखने के लिए भेज रहा है। बहुत हो गया, ऋषि वशिष्ठ को बुलाओ। मैं इस लड़के से अभी निपटती हूं।"

महल वापस लौटने पर राम ने किस्सा सुना। सुमित्रा ने ऋषि वशिष्ठ को बुलवाकर लक्ष्मण से अपना नाता तोड़ लिया। पर इसमें हैरानी की कोई बात नहीं थी। लक्ष्मण अब हिन्दू कहां रहा, उसने गौ-मांस खाया और वो भी काफ़िरों के साथ। राम अपने भाई को बहुत प्यार करते थे, वह उनका सबसे प्रिय अनुयायी था। उनके रामराज्य में यह क्या हो रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था और लक्ष्मण ने गौ-मांस खाकर सब गड़बड़ कर दिया। और सुमित्रा मां ने भी उसे समझाया नहीं। रीति-रिवाज से उसे शुद्ध करके बात को दबाया जा सकता

था। पर अब देर हो चुकी थी। और लक्ष्मण, उसे तो जैसे ही सुमित्रा मां के फैसले का पता चलेगा वह घर छोड़ देगा। उसे फिर रोकना संभव नहीं होगा।

राम मायूस हो गये थे। सीता बोली, "मां सुमित्रा को इतना बड़ा कदम नहीं उठाना चाहिए था। लक्ष्मण को चुपचाप अकेले में डांट-फटकार लेतीं। किसी को पता नहीं चलता, सबकी जबान बंद रहती। आखिर ये रामराज्य है। यहां किसी को परवाह नहीं। कौन कहां जाता है, क्या खाता है?"

राम ने थोड़ा शर्मिंदा होते हुए उत्तर दिया, "नहीं ऐसी बात नहीं है। अभी कुछ दिन पहले धोबी तुम्हारे बारे में अपनी पत्नी से चुगली कर रहा था। मेरे जासूसों ने मुझे इत्तला दी थी।"

सीता ने मुंह बनाया, "तुम्हारे जासूस शयनकक्ष की बातों की भी चुगली करते हैं। और धोबी की बात पर क्या ध्यान देना। कौशल्या मां की बात याद करो, आम लोगों की बातों पर ध्यान मत दो। तुम बड़े काम करने निकले हो, इन बेकार के कामों में मत उलझो।"

"पर कौशल्या मां भी सुमित्रा मां को समझा नहीं सकीं," राम ने अफसोस जताया।

"कुछ भी हो सुमित्रा मां ने गलत किया। कम से कम मेरी बहन उर्मिला का ख्याल किया होता, वह गर्भवती है पांच माह से।" सीता ने अपने पेट को निहारा। उसे छः माह का गर्भ था। राम परेशान थे। अगर रामराज्य कायम रखना होगा तो उन्हें भी लक्ष्मण से नाता तोड़ना होगा। नहीं तो प्रजा बगावत कर देगी। वफादारी बड़ी कमज़ोर होती है।

राम ने निर्णय करके उर्मिला व लक्ष्मण को बताया। उन्हें अयोध्या छोड़कर कुरूपथ जाना होगा। अपना राजपाट वहां जमाना होगा। राम उन्हें सेना, सेवक और धन सब देगें।

लक्ष्मण का राज्याभिषेक धूम-धाम से हुआ। उसके राज्य का नाम बदलकर लक्ष्मणावती रखा गया और लखनऊ को उसकी राजधानी घोषित कर दिया। लक्ष्मण का नाम नवाब लक्ष्मनुल्लाह और उर्मिला का उमराव बेगम हो गया।

समय बीतता गया। उर्मिला ने दो जुड़वां पुत्र हसन और हुसैन को जन्म दिया। सीता और राम के भी दो बेटे लव और कुश जन्मे।

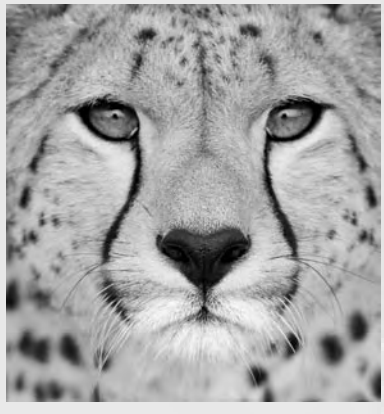

पर सुमित्रा के आदेशानुसार दोनों राज्यों के बीच कोई आपसी संबंध नहीं रखा गया। राम-लक्ष्मण एक दूसरे के सम्पर्क में नहीं थे, परन्तु दोनों इस बात से दुखी थे। उनके जासूस उन्हें बच्चों की खुशहाली का समाचार देते रहते थे। अपने सोलहवें जन्मदिन के बाद लव-कुश ने हिरण के शिकार पर जाने का निश्चय किया। तीर-कमान, खंजर और भाले लेकर दोनों अपने घोड़ों पर सवार होकर निकल पड़े। हालांकि शिकार पर जाने के उनके इरादे पर सीता नाखुश थी, फिर भी उन्होंने बच्चों को खाने-पीने के लिए स्वादिष्ट भोजन बांधकर दिया।

लक्ष्मणावती और अयोध्या के बीचों बीच घना जंगल था। रत्नाकर के समय उसमें ठगों और डाकुओं का वास था। परन्तु रामराज्य के बाद वहां पक्षी और जानवर आराम से बस गये थे। सरयू नदी के घाट पर हिरण पानी पीने आते और झाड़ियों के बीच छिपकर चीते उनकी टोह लेकर शिकार करते। फिर भी लोग कहते- रामराज्य में चीते-हिरण एक घाट पर पानी पीते हैं।

उधर लखनऊ में हसन-हुसैन जवान हो चुके थे। वे भी सोलह वर्ष के थे और चीते का शिकार करके 'शेर बहादुर' का खिताब हासिल करना चाहते थे। सो अपने सफेद घोड़ों पर लज़ीज़ खाने की टोकरी बांधकर वे भी जंगल की ओर रवाना हो गये।

घने जंगल में पहुंचकर लव-कुश और हसन-हुसैन छिपकर सरयू के तट पर अपने शिकार के इंतज़ार में बैठ गये।

दो जोड़ी आंखें हिरण की तलाश में और दो जोड़ी नैन चीते की फिराक में। जब हिरण पानी पीने आया और चीता उस पर झपटने दौड़ा तब दोनों ओर से बाणों की वर्षा हुई। दोनों हिरण और चीता ढेर हो गये। लव-कुश

और हसन-हुसैन अपने शिकार लेने झाड़ियों से बाहर निकले। पर सामने विकट समस्या थी- हालांकि हिरण और चीता दोनों मारे गये थे परन्तु यह स्पष्ट था कि लव-कुश ने चीता मारा था और हसन-हुसैन ने हिरण। दोनों जानवर मारे गये थे पर सही बाणों से नहीं। निशाना या तो सटीक था या फिर दोनों से ही चूक हुई थी, कहना कठिन था। देखा जाये तो लव-कुश हिरण के शिकार में असफल हुए थे और हसन-हुसैन चीता नहीं मार पाये थे। चारों राजकुमारों के चेहरों पर निराशा साफ झलक रही थी।

"हम लव-कुश हैं, राम के पुत्र। हम अयोध्या में रहते हैं", लव-कुश बोले। "हम हिरण का शिकार करने आये थे। अब अगर हम चीता लेकर घर लौटेंगे तो सब हमारी खिल्ली उड़ाएंगे।"

"हम हसन व हुसैन हैं, लखनऊ शहर के लक्ष्मण के बेटे। हम चीते के शिकार पर निकले थे। पर अब जब हम हिरण लेकर लौटेंगे तो हमारा खूब मज़ाक बनेगा।"

एकाएक चारों एक साथ बोल उठे, "हम अदला-बदली क्यों न कर लें? तुम जो लेने आये थे वो तुम ले जाओ और हम जो चाहते हैं उसे ले लेंगे। यह हम सबके लिए अच्छा रहेगा।"

यह इतना बढ़िया उपाय था कि चारों भाइयों ने भाव विभोर होकर एक दूसरे को गले लगा लिया।

दुर्भाग्य से ठीक उसी वक्त नारद अपनी वीणा बगल में दबाए उड़नखटोले पर सवार जंगल के ऊपर से गुज़र रहे थे। सरयू की ठंडी छांव देखकर उन्होंने सोचा विश्राम करे लें। जैसे ही नारद घाट पर उतरे उन्होंने चारों राजकुमारों को अदला-बदली का सौदा तय करते सुना। नारद ने फौरन खुद को अदृश्य कर लिया और ध्यानपूर्वक राजकुमारों की गतिविधियां देखने लगे।

चारों राजकुमारों ने एक साथ आसन जमाकर अपना-अपना खाने का सामान सजा लिया था। नारद हतप्रभ रह गये थे। हसन-हुसैन खीर-पूड़ी का मज़ा ले रहे थे जो सीता ने बड़े चाव के साथ बनाई थी। और लव-कुश कबाब, तंदूरी रोटी और बिरयानी चटखारे लेकर खा रहे थे। नारद यह माजरा खामोशी से देखते रहे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि चारों भाई एक ही सांचे में ढले हों, एक दूसरे का प्रतिबिम्ब हों। ये मंज़र एक खूबसूरत दोस्ती की शुरूआत थी।

भोजन के पश्चात राजकुमारों ने वादा किया कि वे किसी से इस मुलाकात का ज़िक्र नहीं करेंगे। उन्होंने अगली पूनम की रात को दोबारा मिलने का निश्चय करके एक दूसरे से विदा ली। लव-कुश हिरण संभाले महल लौटे और हसन-हुसैन चीता साथ ले गये। सीता और राम अपने बच्चों के वापस लौटने पर हर्षित थे।

इधर लक्ष्मणावती में भी उत्सव का माहौल था। दोनों राजकुमार चीते का शिकार करके लौटे थे। उर्मिला ने पूजाघर से बाहर निकलकर वन बीबी का शुक्रिया अदा किया। वह अभी भी आधी हिन्दू थी और इस बात से खुश थी कि राजकुमार सही सलामत लौटे हैं।

नारद इस घटना से बेहद दुखी थे- ये लड़के धोखेबाज़ हैं। वे उस जीत की वाह-वाह लूट रहे हैं जिसका श्रेय उनको जाता ही नहीं है। इस पर इन्होंने जो भोजन खाया उसका क्या? इस बात का सुधार होना ही चाहिए। नारद बेचैन हो उठे और सीधे लक्ष्मणावती पहुंचे।

लक्ष्मनुल्लाह अपने मंत्रियों के साथ बैठक में मसरूफ थे। नारद को देख वे गदगद हो उठे। नारद को नवाब के साफे पर चमकता हीरा कुछ जाना-पहचाना सा लगा, कहीं यह हीरा कोहिनूर तो नहीं? सलाम बजाकर लक्ष्मनुल्लाह ने नारद को आदर सहित बैठाया और बोले, "यह हमारी खुशकिस्मती है कि आप इतने शुभ अवसर पर यहां पधारे हैं।"

नारद फौरन बोल उठे, "वास्तव में ये तुम्हारे लिए शर्मिन्दा होने का अवसर है नवाब लक्ष्मण। क्या शर्म की बात है कि तुम्हारे पुत्र धोखेबाज़ हैं। हिरण मार के चीता वापस लाते हैं। क्या वे चीता मारने में सक्षम हैं। झूठे, चीता तो रामचन्द्र के पुत्रों ने मारा था।"

लक्ष्मण कोई राम तो थे नहीं, उनका दिमाग गर्म था। "क्या! आपकी इतनी हिम्मत, मेरे ही महल में आकर मेरे बेटों पर इल्ज़ाम लगा रहे हैं। और मेरे भाई राम और मेरे बीच फूट डालने के लिए कह रहे हैं कि चीता मेरे भतीजों ने मारा था। बेकार की बाते बंद कीजिए और यहां से दफ़ा हो जाइए। मुझे आपके स्वर्ग में कोई आरक्षण नहीं चाहिए। मैंने अपना मज़हब बदल लिया था और बेहेश्त में मेरी जगह अब सुरक्षित है। आप मुझे छू भी नहीं सकते इसलिए अपना रास्ता नापिये, मिस्टर।"

नारद स्तब्ध रह गये। अपनी वीणा को तीन बार ठोक कर उन्होंने लक्ष्मण को श्राप दिया, "मिस्टर लक्ष्मण यह मत समझना कि सिर्फ़ लक्ष्मण से लक्ष्मनुल्लाह बन जाने के कारण तुम मेरे श्राप से बच सकते हो। अगर मैं तुम्हें सबक नहीं सिखा सका तो तुम्हारे भाई नारायण तो हैं ही।" नारद की आंखे आग बरसा रही थीं और उनकी शक्ल ड्रैगन की तरह लग रही थी। वे अपने उड़नखटोले पर बैठकर अयोध्या की ओर निकल पड़े।

नारायण-नारायण का उच्चारण करके नारद ने अपना रोष कम किया। जब तक वे अयोध्या पहुंचे उनकी मुस्कुराहट वापस लौट चुकी थी। रामचन्द्र नारद को देख ज़्यादा खुश नहीं हुए। उन्हें मालूम था कि नारद अच्छी खबर लेकर नहीं आते थे। फिर भी रामचन्द्र ने आदर सहित उन्हें बैठाया। नारद ने राम को आशीर्वाद दिया और सीधे मतलब की बात पर आये, "महाराज रामचन्द्र क्या चल रहा है। सुना है राजकुमारों ने हिरण आखेट किया है।"

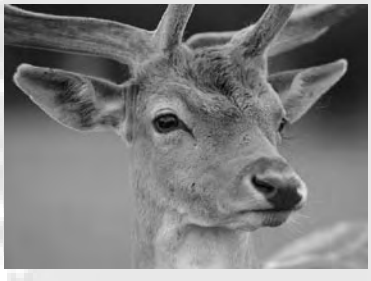

राम ने मुस्कुराकर अभिमान सहित उत्तर दिया, "मुनिवर यह बात सच है कि कुमारों ने एक बड़े सांभर का शिकार किया है। लगभग अस्सी से सौ किलो मांस वाला सांभर।"

गंभीर स्वर में नारद ने आगे बात बढ़ाई, "महाराज वहां एक चीता था और एक हिरण। क्या आप सोचते हैं कि राजा रामचन्द्र के पुत्र हिरण का आखेट करेंगे और चीते को छोड़ देंगे।"

मुनिवर की बात राम की समझ से परे थी। हाथ जोड़कर बोले, "एक हिरण, एक चीता। हिरण का शिकार मृगया होता है और अगर वे चीते का आखेट करते तो हिरण वापस लेकर क्यों लौटते? दोनों ही जानवरों का शिकार करना जुर्म है।" फिर कुछ और विनम्रता से बोले, "मुनिवर मैं जानता हूं कि चीता संरक्षित जीव है और हाल ही में सांभर को भी इस श्रेणी में जोड़ा गया है। दोनों का आखेट दण्डनीय है। मेरे बेटों ने कानून तोड़ा है और उसकी सज़ा उन्हें मिलेगी। मैं दोनों पर जुर्माना करूंगा।"

नारद के सब्र का बांध टूट चुका था, "ये जुर्म, दण्ड, जुर्माना क्या है? हम आसमानवासी इन कानूनों की कोई परवाह नहीं करते। मैं तुम्हें बताता हूं कि दरअसल वहां क्या हुआ था। तुम्हारे पुत्रों ने हिरण का आखेट नहीं किया था। उन्होंने चीता मार गिराया था। मैंने यह सब अपनी आंखों से देखा है।"

राम नारद की ओर हैरानी से देखते रह गये। "एक चीते का आखेट! फिर हिरण कहां से आ गया?"

"यह सच आपको अपने पुत्रों से पूछना चाहिए।"

दोनों राजकुमारों को दरबार में बुलाया गया। राम के पूछने पर दोनों से शर्म से अपने सर झुका लिए। रामचन्द्र को बेहद दुख पहुंचा।

"तुम दोनों ने ये क्या मूर्खता की है? क्या वाल्मिकी के बोर्डिंग विद्यालय में तुम्हें यही सिखाया गया है? और वे दोनों राजकुमार अरण्य में क्या कर रहे थे। उन्होंने तुम्हारे साथ छल किया और चीता लेकर गायब हो गए।"

लव-कुश ने राम की बात का विरोध किया। "नहीं पिताजी कोई छल-कपट नहीं किया था। यह हम चारों का निश्चय था। हम सब वह लेकर लौटे जिसके लिए हम वन गये थे। फिर समस्या कहां है? हां, हमसे गलती हुई कि हमने सच छुपाया। हमें क्षमा कर दीजिए।"

गदगद रामचन्द्र ने पुत्रों की भूल माफ कर दी। दो राजकुमारों ने क्या खूब समाधान निकाला था। लव-कुश ने बताया कि दोनों राजकुमार लक्ष्मणावतीकुमार हसन-हुसैन थे।

भाव-विभोर होकर राम बोले, "उत्तम, अति उत्तम वैसे भी चीता किस काम का था। हिरण तो बढ़िया दावत के काम आएगा।"

नारद को गुस्सा बढ़ता जा रहा था, "ये क्या महाराज, आप एक चतुर राजा हैं, क्या आप इस तरह स्नेह में अंधे हो जाएंगे? क्या आप इन राजकुमारों से राजपाट में मश्विरे की उम्मीद रख सकते हैं? आपकी प्रजा क्या कहेगी? आप तुरन्त लक्ष्मणावती दूत भेजिए और उन्हें चीता लौटाने का आदेश दीजिए।"

राम ने विनम्रता से कहा, "मुनिवर मुझे कुछ क्षण इस बात पर विचार करने दें।"

राम ने अपने मंत्रीगण से इस समस्या पर बातचीत की। राज्य के मंत्रीगण दो गुटों में बंट गये थे। एक गुट चाहता था कि चीता वापस मांगा जाए। दूसरे के विचार में इससे कोई फायदा नहीं था। राम ने सोचा, आखिर चीता मेरे लक्ष्मण के बच्चों के पास ही तो है उसे वहीं रहने देना चाहिए।

अचानक बाहर से शोर की आवाज़ें आने लगीं। सिपाहियों ने आकर खबर दी, "लोगों ने महल को चारों ओर से घेर लिया है। वे चीख रहे हैं, हमें हिरण नहीं चीता चाहिए।"

तभी नारद के वीणा की आवाज़ कानों में पड़ी। नारद ने रामचन्द्र को अलग ले जाकर धीरे से कहा, "सुनो रामचन्द्र मैंने अभी लोगों को केवल हिरण-चीते की अदला-बदली के बारे में बताया है। अभी लव-कुश के कबाब और बिरयानी खाने की बात नहीं कही है। इसके अलावा एक दूसरे के बर्तनों में पानी पीना आदि भी है। अगर तुम चीता वापस नहीं मंगवाते तो मुझे मजबूरन सब पोल खोलनी होगी। फिर तो तुम्हें अपने पुत्रों से नाता तोड़ना ही पड़ेगा।"

ठीक उसी क्षण भीड़ महल के फाटक तोड़कर भीतर घुस आई। रामचन्द्र उनसे मिलने दौड़े।

इसके बाद क्या हुआ?

राम की सेना और लक्ष्मण की सेना के बीच युद्ध छिड़ गया। एक तरफ मरा हुआ हिरण पड़ा था और दूसरी तरफ चीता। दुखी हसन-हुसैन अपने श्वेत घोड़ों पर और लव-कुश अपने कत्थई अश्वों पर रणभूमि की ओर दौड़ पड़े। हाथ उठाकर चारों विनती कर रहे थे, "रुक जाओ! रुक जाओ! यह युद्ध बन्द करो।"

पर किसी ने भी उनकी गुहार नहीं सुनी। आकाश में सैकड़ों तीर इधर-उधर टकरा रहे थे। चारों तरफ हाहाकार और कोलाहल मचा था। एक ही पल में चारों अमन पसंद राजकुमार निर्जीव होकर धरती पर पड़े थे। सरयू का जल अनगिनत मासूमों के रक्त से सराबोर, धरती की छाती को भेदता चला जा रहा था। पीड़ा से टूट चुके रामचन्द्र और लक्ष्मनुल्लाह ने खुद को रक्तरंजित, उफनते, आक्रमक से जल में प्रवाहित कर लिया। सरयू नदी इस दुख का बोझ बर्दाश्त नहीं कर पाई और रेत के सूखे ढेर में जड्वत हो गई।

पर नरसंहार थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। आक्रोश से भरे मानस और खून से लथपथ फिज़ा ने पेड़ों को भी बेजान पत्थरों में तब्दील कर दिया था। हरियाली सूखकर रेत के कण प्रतीत हो रही थी।

घना जंगल अब बीहड़ से हरा हो गया था। पर खून की होली आज तक खेली जा रही है।

नारद अपने उड़नखटोले पर सवार आसमान में उड़ते फिरते हैं- एक मिनट में तैंतीस दफा खिलखिलाकर हंसते हुए कहते हैं, "ये मूर्ख अब तक लड़ रहे हैं। दुनिया ने मुझे उड़नतश्तरी मान लिया है जो सब कुछ नेस्तोनाबूत कर देती है।"

और पवन पुत्र हनुमान, अमर्त्य, वीर, अंजनीपुत्र निराशा व वेदना से बोझिल, पवन की सवारी करते हुए सीना चीरकर विलाप करते हैं। उनकी व्यथा के स्वर कानों में गूंजते हैं- हा हसन! हा हुसैन! हाय रे लव! हाय रे कुश!

बंगला मूल कथाः उत्तरकांड से अनूदित